# लाइब्रेरी की किताब फाड़ने का हक

**– कौशलेन्द्र प्रपन्न**

लाइब्रेरी की किताबों, पत्रा–पत्रिाकाओं, जर्नल्स वेफ साथ हमारा बरताव दोस्ताना न होकर ग़ैर का होता है। किताबें पाठकों वेफ लिए होती हैं। पाठक किताबों वेफ लिए। लेकिन हम इस रिश्ते में ारा और गहरे उतर जाते हैं। पसंदीदा पृष्ठों, अध्यायों को पफाड़कर उदरस्त कर लेते हैं। बिना इसकी परवाह किए कि उस किताब वेफ और भी पाठक हो सकते हैं। हम लाइब्रेरी की किताबों को सार्वजनिक संपत्ति मानते हैं। अख़बारों की कटिंग, पन्नों को पफाड़ना बड़ी ही आम चीरहरण की घटनाएँ लाइब्रेरी में घटती हैं। लेकिन कहीं इस दुर्घटना पर न तो कोई सुगबुगाहट होती है और न कोई अन्तर्चेतना जागती है। शायद इस तरह वेफ 'लोग' ही लाइब्रेरी सामग्री को–बाहरी आव्रफमणों से क्षतिग्रस्त करते हैं। लाइब्रेरी की किताबों, पत्रिाकाओं आदि वेफ दुश्मनों में जैविक, प्राकृतिक, तकनीक एवं ख़ुद पाठक भी शामिल हैं। अच्छी से अच्छी लाइब्रेरी में भी वुफछ इस वर्ग वेफ पाठक मिल जाते हैं जो अपनी ारूरत वेफ पाठ ;पृष्ठोंद्ध को पफोटोकॉपी, इश्यू कराने की बजाए पफाड़ कर ले जाते हैं।

इवरी बुक्स है ा हर रीड़र। बुक्स पफॉर ऑल आदि पंक्तियाँ दीवारों पर टंगी या जुम्ले वेफ रूप में अच्छी लगती हैं। लेकिन वास्तव में इन किताबों वेफ साथ क्या होता है यह जानना हो तो किसी स्वूफल, कॉलेज, विश्वविद्यालय आदि की लाइब्रेरी में घूमना दिलचस्प होगा। सजे–ध्जे एसी हॉल में किताबों की रंगत और दूसरों कमरों ;गोदामनुमाद्ध में ढ़ेर में पड़ी किताबों का न ाारा आम मिलता है। अव्वल तो लाइब्रेरी में पढ़ने वालों की संख्या कम होती है, लेकिन जो लोग आते भी हैं वो पढ़ते कम बातें एवं दूसरे कामों में मग्न रहते हैं। सामान्यतः माना जाता है कि लाइब्रेरी में शांतिपूर्वक

पढ़ने वाले ही आएं, जबकि होता यह है कि इध्र पढ़ने वालों की गर्दन झुकी होती है उध्र किताबों से पन्ने पफट रहे होते हैं।

आज लाइब्रेरी की किताबों, जर्नल आदि डिजिटल पफॉर्म में तब्दील हो रही हैं। इतना ही नहीं बल्कि पन्ने न पफटें, लोगों ;पाठकोंद्ध वेफ पास बैठकर पढ़ने का वक़्त नहीं तो पफोटोकॉपी करा कर ले जाएं, इसकी सुविध उपलब्ध करायी जाती है। मगर हम पाठक इतने सुथरे कहाँ हैं? हमें तो पन्नों को पफाड़ने में सुवूफन मिलता है। बेशक लाइब्रेरी ;अमेरिकन, ब्रिटिश कॉन्सील, त्रिामूर्त्ति भवन, नेशनल आरकाइव ऑपफ इंडिया आदिद्ध सूचनाएँ, जानकारियाँ, पठन सामग्री ऑन डिमान्ड सीडी, फ्रलॉपी, पफोटोकॉपी, ई–मेल आदि वेफ माध्यम से मुहैया कराती हैं। पहली बात तो यह है कि आज सूचनाओं, जानकारियों की हमें पग–पग पर ाूरत पड़ती है, लेकिन अपनी इस ाूरत को दबाना हमने सीख लिया है। मॉल्स, पीवीआर, सजे–ध्जे शो–रूम में घूम आएंगे, बिना– ाूरत की चीजें खरीद अलमीरा में ठूँस देंगे। लेकिन ज्ञान, सूचना की ाूरत को टाल देते हैं। यादा परेशान हुए तो नेट की शरण में आध–एक घंटा देकर कच्ची–पक्की जानकारियों से तृप्त हो जाते हैं।

समय–समय पर किए गए सर्वेक्षण चीख–चीख कर बताते हैं कि हमारे देश, शहरों, महानगरों की स्वूफली, कॉलेज लाइब्रेरी खस्ता हाल में हैं। जो हैं वो बेचारी किसी तरह आइसीयू में भर्ती हैं। न तो बजट मिल पाता है और न सही प्रबंध्कीय देखभाल। पाठक तो दूर वेफ पंछी हैं। मन किया तो लाइब्रेरी में पल भर टिवेफ पिफर उड़ गए वैंफटीन की ओर। एनसीइआरटी वेफ निदेशक प्रो. कृष्ण वुफमार इस हालत में अपनी चिंता गाहे बगाहे प्रकट कर चुवेफ हैं। कहते हैं छात्राों में पुस्तक पढ़ने की रूचि जगाने की आवश्यकता है। बच्चे लाइब्रेरी का इस्तमाल करें। लेकिन परिणाम संतोषजनक नहीं मिलता। हालांकि दिल्ली शिक्षा निदेशालय ने पिछले दिनों स्वूफलों की लाइब्रेरी का निरीक्षण किया। वुफछ लाइब्रेरियन को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया। लाइब्रेरी की हालत में लम्बी–चौड़ी टिप्पणी ाूर लिखी गईं। अगर उन टिप्पणियों से गुजरें तो मालूम होगा कि सरकारी–सरकारी मान्यता प्राप्त विद्यालयों की

लाइब्रेरी में नई किताबों का आगमन लम्बे समय से नहीं हुआ था। स्वूफल स्तर पर लाइब्रेरी में किताबों को खरीदने, वेडिंग आउफट करने की प्रविफया थोड़ी कठिन है। लेकिन इन अगर–मगर, किन्तु–परन्तु वेफ चक्कर में मारी तो लाइब्रेरी की मूल आत्मा ही जाती है।

लोकसभा अध्यक्ष श्री सोमनाथ चटर्जी ने न वेफवल दिल्ली में बल्कि कोलकाता में भी बाल–पुस्तकालय की ाूरतों पर अपनी चिंता प्रकट कर चुवेफ हैं। उन्हीं का प्रयास है कि संसद भवन वेफ वेफन्द्रीय कक्ष में 'बच्चों का कोना' सृजित किया गया है। यहाँ बच्चे दिन भर एन्ट्री पास बनाकर लाइब्रेरी का इस्तेमाल कर सकते हैं। यह एक अलग विचार का मुद्दा है कि संसद भवन की लाइब्रेरी में किस तबवेफ वेफ बच्चों की पहुँच होगी। बच्चों को ख़ासकर किताबों, एनसाइक्लोपीडिया की ाूरत तब पड़ती है जब कोई ऐसा प्रोजेक्ट, एसाइन्मेंट, होमवर्वफ में मिलता है, जिसको बनाने में माँ–बाप असमर्थ होते हैं। वुफछ तो 'नेट गुरु' आवश्यकता की पूर्ति करता है। लेकिन नेट रामबाण नहीं है। वुफछ माँगें लाइब्रेरी में पूरी होती हैं। इस लिहाज से 'लाइब्रेरी शरणं गच्छामि' होना पड़ता है। तब हमारी आँखें आस–पास लाइब्रेरी ढूँढ़ती हैं। लेकिन हासिल वुफछ भी नहीं होता। मॉल्स, शो–रूम, सजी–ध्जी ब्रान्डेड दुकानें मिल जाती हैं। लेकिन लाइब्रेरी नहीं। पूरी दिल्ली में लाइब्रेरी ढूँढ़ने निकलें तो स्वूफल, कॉलेज, विश्वविद्यालयी लाइब्रेरी को छोड़ कर हरदयाल पब्लिक लाइब्रेरी की शाखाएं मिलती हैं। इसवेफ अलावा सांस्थानिक, अमेरिक, ब्रिटिश, दूतावासों, मंत्राालयों एवं अकादमिक लाइब्रेरी न ार आती हैं। अव्वल तो वहाँ किस प्रकार की किताबें सूचनाओं, पत्रिाका आदि वेफ संग्रह हैं इसकी जानकारी नहीं होती। अगर होती है तो दूरी को देखते हुए अपनी ाूरत की प्रकृति में रद्दो–बदल कर देते हैं। यानी – कमतर सूचनाओं, दोयक द र्ा की जानकारियों से काम चला लेते हैं।

ख़ुद को हम एक साध्न संपन्न समाज, महानगर वेफ वासी मानते हैं। गर्व से सिर उँफचा करवेफ कहते हैं। लेकिन एक अदद लाइब्रेरी हमारे आस–पास हो – इसकी ाूरत हमें क्यों नहीं महसूस होती। क्या हर सवालों, जिज्ञासाओं की पूर्ति नेट

द्वारा हो जाता है? स्वयं दिल्ली वेफ आस–पास वेफ इलाकों दक्षिणी, पूर्वी, उत्तरी क्षेत्राों वेफ स्वरूप, साइबर वैफपेफ में बैठने वाले यूज़र्स पर न  ार डालें तो हव़फीकत वुफछ और सामने आती है। लिखित, मुद्रित सामग्री का स्थान वेब दुनिया वेफ उड़ते, तैरते शब्द जाल नहीं ले सकते। दूसरे शब्दों में कहें तो पेपरलेस सोसायटी की अवधरणा साकार हो रही है, लेकिन रजिस्टर, पफाईल भी बनाए जाते हैं। आपात स्थिति में तकनीकी व्यवधन वेफ वक़्त हमारा पेपर बेस सोसायटी हमारी मदद करती है इसे नहीं भुलना चाहिए। सीडी रोम, डीवीडी, फ्रलॉपी, नेट को इस्तेमाल वही बच्चे, व्यस्क कर रहे हैं जिनवेफ पास कम्प्यूटर है। मगर अवेफली दिल्ली वेफ पास भी सरकारी स्वूफलों में पढ़ने वाले बच्चों का कम्प्यूटर ज्ञान पेंट–ब्रश, पॉवर–प्वाईंट से आगे नहीं बढ़ पाया है। ऐसे में हमारी  ारूरत, पॉवेफट ख़र्च, पहुँच में लाइब्रेरी होती है।

**कौशलेन्द्र प्रपन्न**

;स्वतंत्रा पत्राकारद्ध

6 ⁄ 54, डबल स्टोरी,

विजय नगर, दिल्ली–110009

पफोन : 9891807914

ांनीअ ⁄ तमकपिफ्ंपसण्बवउ